# आचार्य भक्ति

विकास छाबड़ा (जैन), इंदौर

www.JainKosh.org

आचार्यों की भक्ति चाहिए

आचार्यों का आशीष चाहिए ।

पवित्रता आचार्य से चाहिए ।

आचार्य गुरु से आचार चाहिए ।

अर्हद्बली जैसी एकता चाहिए ।

- संघों की स्थापना द्वारा एकता

भद्रबाहु जैसा संघ चाहिए ।

- 12000 मुनियों के विशाल संघ के नायक

धरसेन जैसी श्रुतभक्ति चाहिए ।

- ग्रंथों की रचना, संरक्षण हेतु विद्या प्रदान की

पुष्पदंत जैसी क्रांति चाहिए ।

- इस काल के प्रथम शास्त्र लिपिबद्धकर्ता

## भूतवली जैसी शिष्यता चाहिए ।

- अपने गुरु धरसेनस्वामी की आज्ञा की पूर्णता

## गुणधर जैसी सूक्ष्मता चाहिए ।

- महाविशाल ज्ञानप्रवाद को मात्र 180 गाथा में निबद्ध किया

## आर्यमंक्षु जैसी शुद्धि चाहिए ।

- गुणधर भट्टारक के कषायपाहुड पर शुद्ध व्याख्यान किया

## यतिवृषभ जैसी बुद्धि चाहिए ।

- चूर्णीसूत्र, तिलोयपण्णत्ति जैसे सूक्ष्म ग्रंथों की रचना

कुन्दकुन्द सी पवित्रता चाहिए ।

- सर्वमान्य दिगंबर आचार्य जिन्होंने समयसार जैसे पवित्र शास्त्र दिये

उमास्वामी सी अल्पता चाहिए ।

- संपूर्ण जैन वांगमय को मात्र 357 सूत्रों में रच दिया

वट्टकेर सा आचार चाहिए ।

- प्रथम मुनि-आचार ग्रंथ मूलाचार के रचनाकार

आराधना शिवकोटि सी चाहिए ।

- प्रथम समाधि ग्रन्थ 'भगवती आराधना' के रचयिता

## समंतभद्र सा सिद्धांत चाहिए ।

• अनेकांत के प्ररूपक, स्थान-स्थान पर शास्त्रार्थ कर जैन सिद्धांत की स्थापना

## पूज्यपाद जैसा लक्षण चाहिए ।

• सर्वमान्य लक्षणों की व्याख्या

## अकलंक जैसी तर्क शक्ति चाहिए ।

• बौद्धों से 6 माह तक लगातार शास्त्रार्थ किया और जैन सिद्धांत की स्थापना की

## विद्यानंदी सा न्याय चाहिए ।

• श्लोकवार्तिक अलंकार, अष्टसहस्री जैसे न्याय शास्त्रों के रचनाकार

रविषेण सा पुराणपुरुष चाहिए ।

• पद्मपुराण के पुराणपुरुषों के व्याख्याता

जिनसेन सा साहित्य चाहिए ।

• महापुराण के अद्भुत साहित्य के रचयिता

वादिभसूरी सी सूक्ति चाहिए ।

• क्षत्रचूड़ामणि ग्रंथ की सूक्तियां सर्वविख्यात हैं

गुणभद्र सी पूर्णता चाहिए ।

• जिनसेन स्वामी के अपूर्ण महापुराण को पूर्ण किया

योगेंदु सा परमात्म चाहिए ।

• परमात्मप्रकाश ग्रन्थ के रचयिता

अमितगति जैसी परीक्षा चाहिए ।

• धर्मपरीक्षा ग्रन्थ की रचना द्वारा परीक्षा की विधि

अमृतचन्द्र जैसा अध्यात्म चाहिए ।

• आध्यात्मिक आत्मख्याति टीका के रचयिता

जयसेन सी सरलता चाहिए ।

• नाटकत्रयी ग्रंथों पर सरल-सुबोध संस्कृत टीकाएँ

## वीरसेन सा विस्तार चाहिए ।

• सर्वाधिक विस्तार वाली धवल, जयधवल टीका के कर्ता

## नेमीचन्द्र जैसा सार चाहिए ।

• धवल, महाधवल आदि ग्रंथों को मात्र 3 ग्रंथों के भर दिया

## सूत्र माणिक्यनंदी सा चाहिए ।

• जैनन्याय के प्रथम सूत्रग्रन्थ 'परीक्षामुख' के कर्ता

## प्रभाचंद्र जैसी टीका चाहिए ।

• संक्षिप्त परीक्षामुख पर वृहद् प्रमेयकमलमार्तण्ड टीका

भावना कार्तिकेय सी चाहिए ।

• कार्तिकेय-अनुप्रेक्षा के कर्ता

सकलकीर्ति सी प्रतिभा चाहिए ।

• अनेकों पुराण, चरित्र ग्रंथों के रचयिता

देवसेन जैसी पद्धति चाहिए ।

• आलाप-पद्धति, नयचक्र के कर्ता

मानतुंग जैसी भक्ति चाहिए ।

• भक्ति से ओतप्रोत 'भक्तामर स्तोत्र' के कर्ता

महावीराचार्य सा गणित चाहिए ।

- गणितसार-संग्रह नामक महान गणित शास्त्र के कर्ता

उग्र-आदित्य से प्राण चाहिए ।

- कल्याणकारकं नामक आयुर्वेद शास्त्र के कर्ता

इंद्रनंदी सा इतिहास चाहिए ।

- श्रुतावतार के द्वारा पिछले 1000 वर्षों का इतिहास बताया

वसुनंदी सी प्रतिष्ठा चाहिए ।

- प्रतिष्ठासार-संग्रह के कर्ता

सोमदेव जैसी नीति चाहिए ।

- नीतिवाक्यामृत जैसे महान नीतिशास्त्र के रचयिता

शुभचंद्र सा उपदेश चाहिए ।

- ज्ञानार्णव जैसे सरल सुबोध उपदेश के दाता

वादिराज जैसा स्तोत्र चाहिए ।

- आध्यात्मिक 'एकीभाव स्तोत्र' के रचनाकार

शुद्धता पद्मप्रभ सी चाहिए ।

- नियमसार की अद्भुत शुद्ध भाव आधारित टीका के कर्ता